



“कालीघाट कला परिचय”

श्री. धनंजय विजय टाकलीकर

विद्यावाचस्पती- ललितकला संशोधक

**विद्यार्थी: निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत**

डॉ. नवीन स्वामी

संशोधन मार्गदर्शक:

**निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत**

सारांश:

कालीघाट मंदिर का महत्व: कालीघाट मंदिर सबसे ज्यादा देखे जाने वाले काली मंदिरों में से एक है। पूरे भारत से देवी काली के भक्त दिवाली के दौरान काली पूजा के लिए यहाँ आते हैं, हिंदू महीने अश्विन के महीने में। काली पूजा बहुत उत्साह और उमंग के साथ मनाई जाती है। दुर्गा पूजा भी बहुत उत्साह और जोश के साथ मनाई जाती है। दुर्गा पूजा के दौरान सड़कों पर भीड़ रहती है और पूजा के दौरान दृश्य बहुत शानदार और देखने लायक होते हैं। इस मंदिर की स्नान यात्रा भी बहुत प्रसिद्ध है। पुजारी अपनी आँखों पर पट्टी बांधकर मूर्तियों को स्नान कराते हैं। मंदिर में लोगों की भीड़ हो जाती है, जिससे भक्तों को संभालना मुश्किल हो जाता है। यह मंदिर अपनी खूबसूरत और अनूठी वास्तुकला के लिए जाना जाता है। देवी षष्ठी, शीतला और मंगल चंडी का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन पत्थर हैं। यहाँ सभी पुजारी महिलाएँ हैं। माना जाता है कि मंदिर में एक कुंड है जिसमें गंगा का पानी है, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है। इस स्थान को काकू-कुंड के नाम से जाना जाता है। भक्तों का मानना है कि कुंड में स्नान करने से कई लाभ होते हैं। ऐसा माना जाता है कि कई निःसंतान दंपति संतान प्राप्ति के लिए यहाँ स्नान करते हैं। स्नान घाट को जोर-बांग्ला के नाम से जाना जाता है। बलि हरकठ ताला नामक स्थान पर दी जाती है। राधा कृष्ण को समर्पित एक स्थान भी है, जिसे शमो-रे मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह भारत के 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहाँ भगवान विष्णु द्वारा देवी सती के शव को काटने के बाद सती के शरीर के अंग गिरे थे। हिंदू भक्त इस स्थान पर बहुत उत्साह और आशा के साथ आते हैं। काली पूजा और दुर्गा पूजा के दौरान पूरे भारत से लोग मंदिर आते हैं। ऐसा माना जाता है कि देवी सती की मृत्यु के बाद भगवान शिव बहुत क्रोधित हो गए थे और उन्होंने शिव तांडव शुरू कर दिया था। स्वर्ग के विभिन्न देवताओं के अनुरोध पर भगवान

विष्णु को देवी सती के शरीर के अंग काटने पड़े थे। सती के दाहिने पैर की उंगलियाँ कालीघाट पर गिरी थीं।

कालीघाट चित्रकला का इतिहास:



चमकीले रंगों और बोल्ड रूपरेखाओं की विशेषता वाली कालीघाट पेंटिंग 19वीं सदी में पश्चिम बंगाल के कोलकाता (पूर्व में कलकत्ता) में भारतीय चित्रकला की एक अनूठी शैली के रूप में विकसित हुई। देवताओं और अन्य पौराणिक पात्रों के

चित्रण से लेकर, ये पेंटिंग समय के साथ विभिन्न विषयों को दर्शाने के लिए विकसित हुईं। कालीघाट पेंटिंग की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी की शुरुआत में १८३० से १८५० के दशक के आसपास देखी जा सकती है। ऐसा माना जाता है कि इन चित्रों को बनाने वाले कलाकार तीर्थयात्री थे जो देवी काली की पूजा करने के लिए कालीघाट मंदिर आए थे। अब, कालीघाट क्षेत्र में प्रवास करने के बाद, इन कलाकारों के समक्ष अपनी निर्माण की गति को तीव्र करने की चुनौती उत्पन्न हो गई, तथा अपने आसपास के विभिन्न कला रूपों के प्रभाव में, उन्होंने अपनी सामान्य लम्बी रेखीय, वर्णनात्मक शैली के स्थान पर एक या दो आकृतियों को दर्शाने वाले चौको (वर्गाकार) पैट के एकल फ्रेम का प्रयोग करना शुरू कर दिया। कालीघाट की पेंटिंग में धार्मिक और गैर-धार्मिक दोनों तरह के विषयों का मिश्रण दर्शाया गया है: जबकि हिंदू देवी-देवताओं के देवताओं के चित्रण सबसे आम थे, विशेष रूप से काली, कालीघाट के कलाकारों ने दिन की घटनाओं पर भी प्रतिक्रिया दी, और समकालीन घटनाओं को चित्रित किया, उस अवधि में कलकत्ता के जीवन और समाज के दृश्यों को अपने चित्रों में दर्ज किया। अपने ग्रामीण ठिकानों से बाहर निकलने के बाद, इन चित्रकारों ने उन चीजों को दर्ज किया, जो नए शहरी स्थानों के बारे में उनकी रुचि को बढ़ाती थीं, जहाँ वे खुद को पाते थे।

● प्रस्तावना:

कालीघाट चित्रकला का उद्गम ही उसके न्यूनतमवादी (minimalist) विशेषताओं का आधार बना। यद्यपि "न्यूनतमवादी" शब्द का प्रयोग ऐतिहासिक रूप से इस कला शैली का वर्णन करने के लिए नहीं किया गया था, लेकिन इसकी उत्पत्ति और उद्देश्य ने इसे ऐसी विशेषताओं से युक्त किया जो आधुनिक न्यूनतमवाद के सिद्धांतों के साथ दृढ़ता से मेल खाती हैं।

कालीघाट चित्रकला की न्यूनतमवादी विशेषताएँ उसके उद्गम से कैसे जुड़ी हैं, इसका विवरण यहाँ दिया गया है:

- १) रूप और संरचना का सरलीकरण (Simplification of Form and Composition): पारंपरिक पटुआ कलाकार, जो ग्रामीण बंगाल से कलकत्ता आए थे, पहले लंबी, कथात्मक स्क्रॉल (पटचित्र) बनाते थे।
- २) शहरी बाजार की मांग को पूरा करने के लिए, उन्हें अपनी शैली को बदलना पड़ा। तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को त्वरित, सस्ते और आसानी से ले जाने वाले स्मृति चिन्हों की आवश्यकता थी।
- ३) इसने कलाकारों को एकल-चित्र रचनाओं की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिसमें आमतौर पर एक या दो प्रमुख आकृतियाँ होती थीं। यह पारंपरिक विस्तृत कथा शैली से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान था।
- ४) न्यूनतम या सादे पृष्ठभूमि (Minimal or Plain Backgrounds): उत्पादन की गति और दक्षता बनाए



रखने के लिए, चित्रों की पृष्ठभूमि को अक्सर सादा छोड़ दिया जाता था, न्यूनतम रखा जाता था, या धर्मनिरपेक्ष विषयों में पूरी तरह से हटा दिया जाता था। गैर-आवश्यक विवरणों को हटाना एक जानबूझकर किया गया विकल्प था ताकि मुख्य आकृति पर ध्यान केंद्रित किया जा सके और उत्पादन को अधिकतम किया जा सके।

- ५) यह "स्थान का विरल उपयोग" (sparse use of space) इन कार्यों को एक तात्कालिकता प्रदान करता था जो पारंपरिक कला से भिन्न था।
- ६) यह "रूप का विशाल सरलीकरण" (vast simplification of form) और "बिना विवरण के त्वरित समोच्च रेखाचित्र" (quick contour sketches without detail) उत्पादन को अधिकतम करने की आवश्यकता से प्रेरित था।

- ७) बोल्ड रूपरेखा और तरल रेखाएँ (Bold Outlines and Fluid Lines): कालीघाट चित्रों की विशेषता उनकी बोल्ड रूपरेखा, मजबूत और तरल रेखाएँ, और अक्सर शैलीबद्ध लंबी आँखें हैं।

- ८) कलाकारों ने चिकने, गोल आकार बनाने के लिए व्यापक ब्रशस्ट्रोक का उपयोग किया, जिससे उनके विषयों को गति और जीवंतता की गतिशील भावना मिली।
- ९) यह निष्पादन अक्सर एक ही, लंबी और आत्मविश्वासपूर्ण ब्रशस्ट्रोक के साथ किया जाता था, जो उल्लेखनीय कलात्मक कौशल और गति को दर्शाता था।
- १०) उत्पादन की गति और दक्षता (Speed and Efficiency of Production): कलकत्ता के शहरी बाजार में त्वरित, सस्ते और आसानी से ले जाने वाले कलाकृतियों की भारी मांग थी। इस मांग को पूरा करने के लिए, पटुआ कलाकारों ने अपनी पारंपरिक, समय लेने वाली स्कॉल पेंटिंग से हटकर एक ऐसी शैली अपनाई जो तेजी से निष्पादित की जा सके। सस्ते, तैयार रंगों और मिल-निर्मित कागज की उपलब्धता ने इस संक्रमण को और सुगम बनाया।

पौराणिक महत्व: यह स्थान हिंदू लोगों के लिए धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवी सती ने अपने पिता के घर पूजा सेवा के लिए स्वागत न किए जाने पर अपने पिता से झगड़ा करने के बाद खुद को शांति अग्नि में जिंदा जला लिया था। भगवान शिव क्रोधित हो गए और उन्होंने सती के शरीर को अपने कंधे पर रख लिया। उन्होंने तांडव नृत्य करना शुरू कर दिया। स्वर्ग के देवता घबरा गए और भयभीत हो गए। उन्होंने भगवान विष्णु से हस्तक्षेप करने के लिए कहा। भगवान विष्णु ने तब सती के शरीर को कई टुकड़ों में काट दिया, और वे टुकड़े धरती पर गिर गए। ऐसा माना जाता है कि कालीघाट वह स्थान है जहाँ सती के दाहिने पैर की उंगलियाँ गिरी थीं। देवी काली को हिंदू धर्म की एक असाधारण रूप से भयावह देवी के रूप में देखा जाता है। उन्हें एक रक्षक और एक विध्वंसक के रूप में भी जाना जाता है। देवी काली की पूजा हजारों लोग करते हैं जो भारत और दुनिया के दूर-दूर से आते हैं। यहाँ, देवी काली की मूर्ति देवी काली की अन्य मूर्तियों से अलग है। मूर्ति में तीन प्रमुख आँखें, चार हाथ और एक लंबी उभरी हुई जीभ शामिल है। मूर्ति को आत्माराम गिरि और ब्रह्मानंद गिरि द्वारा बलुआ पत्थर से बनाया गया है। देवी के एक हाथ में शैतान भगवान शुंभ का सिर है। दूसरे हाथ में एक तलवार है जो दर्शाती है कि मानव अहंकार को स्वर्गीय जानकारी द्वारा मार दिया जाना चाहिए और हमारे व्यवहार के तरीकों से समाप्त कर दिया जाना चाहिए। इसी तरह कोई मोक्ष प्राप्त कर सकता है। तीर्थयात्री अक्सर इन कलाकृतियों को स्मृति चिन्ह के रूप में खरीदते थे, इसलिए हिंदू देवी-देवता प्रमुख विषय थे: शिव, पंचानन के रूप में, या पार्वती के साथ, नंदी पर बैठे या सती के बेजान शरीर के साथ नृत्य करते हुए; लक्ष्मी, या तो गजलक्ष्मी के रूप में, या अपने सामान्य रूप में; चंडी दुर्गा के रूप में, कमलाकामेनी महिषासुरमर्दिनी के रूप में अन्य देवता जैसे कार्तिकेय, गणेश, सरस्वती, आदि, और वैष्णव, विष्णु के विभिन्न अवतार, वृंदावन में उनके बचपन के दिनों के दृश्य, राधा, बलराम और यहां तक कि चैतन्य महाप्रभु की छवियां भी इन कलाकृतियों में दिखाई देती थीं। पारंपरिक पटचित्र कला के अवशेषों को आगे बढ़ाते हुए, कालीघाट पटुआ ने दो महान भारतीय महाकाव्यों के प्रसंगों को शानदार ढंग से प्रस्तुत किया। मैक्सवेल सोमरविले एक फिलाडेल्फिया प्रकाशक जिन्होंने 1860 के दशक से अफ्रीका, मध्य पूर्व, थाईलैंड, यूरोप, भारत और बर्मा की यात्रा की, इन स्थानों की रहस्यमय परंपराओं

का अवलोकन किया और कलाकृतियाँ एकत्र कीं, जिनमें 57 कालीघाट पेंटिंग शामिल थीं, जिनमें से लगभग सभी में हिंदू देवी-देवताओं को दर्शाया गया था। संक्षेप में, कालीघाट चित्रकला का उद्गम 19वीं सदी के कलकत्ता के गतिशील शहरी वातावरण में हुआ, जहाँ तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए सस्ते और पोर्टेबल धार्मिक स्मृति चिन्हों की भारी मांग थी। इस व्यावहारिक आवश्यकता ने पटुआ कलाकारों को अपनी पारंपरिक कला शैली को मौलिक रूप से अनुकूलित करने के लिए मजबूर किया, जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसी शैली का जन्म हुआ जो रूप, पृष्ठभूमि और विवरण में अत्यधिक सरलीकृत थी। इस प्रकार, जबकि इसे "न्यूनतमवादी" के रूप में लेबल नहीं किया गया था, कालीघाट चित्रकला ने अपने उद्गम के कारण न्यूनतमवाद के कई मूल सौंदर्य सिद्धांतों को मूर्त रूप दिया, जिससे यह 19वीं सदी के बंगाल की एक विशिष्ट और प्रभावशाली कला शैली बन गई।

वस्तु एवं विषय: कालीघाट की पेंटिंग में धार्मिक और गैर-धार्मिक दोनों तरह के विषयों का मिश्रण दर्शाया गया है: जबकि हिंदू देवी-देवताओं के देवताओं के चित्रण सबसे आम थे, विशेष रूप से काली, कालीघाट के कलाकारों ने दिन की घटनाओं पर भी प्रतिक्रिया दी, औरसमकालीन घटनाओं को चित्रित किया, उस अवधि में कलकत्ता के जीवन और समाज के दृश्यों को अपने चित्रों में दर्ज किया। अपने ग्रामीण ठिकानों से बाहर निकलने के बाद, इन चित्रकारों ने उन चीजों को दर्ज किया, जो नए शहरी स्थानों के बारे में उनकी रुचि को बढ़ाती थीं, जहाँ वे खुद को पाते थे।





जामिनी रॉय की कालीघाट पेंटिंग: शहर में रहने वाले ये लोक कलाकार महानगरीय प्राणियों की दुर्दशा को चित्रित करते थे, जबकि जामिनी रॉय लोक को उनकी विशिष्ट वर्ग स्थिति से चित्रित करके उनकी जड़ों की ओर वापस ले जाते थे। रॉय ने तीन महिलाओं और जननी की छवि बनाने के अपने प्रयास में, जो उनके समय तक लोकप्रिय हो गई थी, कालीघाट कला से सीखने के ऋण को स्वीकार किया, लेकिन "रॉय ने कालीघाट के कलाकारों को ग्रामीण आदर्श खो देने के कारण खारिज कर दिया जब वे शहरी आबादी की सेवा करने के लिए कलकत्ता चले गए"। अनुजा मुखर्जी के लिए, रॉय एक ऐसी आबादी की सेवा करने की आवश्यकता को समस्याग्रस्त करने में सक्षम थे जो काफी हद तक ग्रामीण प्राचीन विदेशी से अलग थी, और "जामिनी रॉय का प्रयास चित्रों को स्थानीय और राष्ट्रीय बनाना था", पर महानगरीय आधिपत्य" को खत्म करने के लिए जड़ों की ओर लौटने का रॉय की राष्ट्रवाद की भाषा सुखद ग्रामीण छवि का सटीक संरक्षण थी, जो प्रवासी कलाकारों के बिल्कुल विपरीत थी, जिन्होंने अपने आस-पास के माहौल को देखा और उसे अपने चित्रों में प्रतिबिंबित किया। झोपड़ी, पेड़, अल्पना आदि जैसे रूपांकनों को काम में लाकर रॉय ने महानगरीय चित्रों को ग्रामीण क्षेत्रों में विस्थापित कर दिया। इसलिए, उनका मुहावरा स्पष्ट रूप से "सौंदर्यशास्त्रीय समानता तक ही सीमित था। इसलिए यह कभी भी प्रामाणिकता के किसी भी स्तर तक नहीं पहुंच पाया; इसमें कभी भी अपने करीबी लोक प्रोटोटाइप की सांसारिकता और उत्साह (या धूर्त हास्य) नहीं था, चाहे वे कालीघाट के हों या पुरी के"। बिष्णु डे इस बात पर

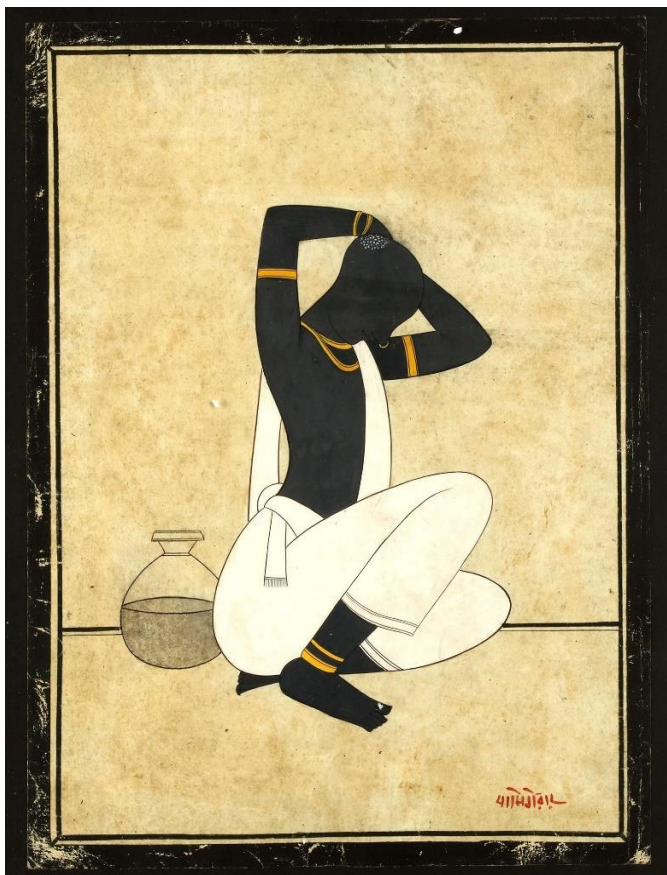
श्री. धनंजय विजय टाकलीकर

डॉ. नवीन स्वामी

6Page

प्रकाश डालते हैं कि कैसे रॉय की पेंटिंग अधिक जीवंत और ऊर्जावान कालीघाट पाटों की तुलना में स्थिर थीं। मुखर्जी के अनुसार रॉय ने जो सबसे "लाभदायक रूपांकन" अपनाया वह आंख का था, " और यह आंखों की पेंटिंग में अंतर था जो लोकप्रियता में विभाजन के लिए जिम्मेदार था"। रॉय की आकृतियों में आंखें हैं जो दर्शक से जुड़ती हैं, जबकि कालीघाट चित्रों में आंखें स्वयं संलग्न होती हैं। मुखर्जी समझाती हैं: "मैं जो कहने की कोशिश कर रही हूं वह यह है कि महिलाएं, बिल्ली, दुर्गा, गणेश और यहां तक कि असुर भी मृत भाव से दर्शक को देखते हैं, जबकि कालीघाट चित्रों में देखे गए लोग बस दर्शक से खुद को अलग कर लेते हैं"। उनके अनुसार, इससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि उन्नीसवीं सदी में अभिजात वर्ग ने उपार्जित लोगों को कैसे देखा। इसलिए, आंखों का चित्रण पटुआओं द्वारा किया गया एक सचेत विकल्प है यह दर्शाता है कि अभिजात वर्ग अपनी नई पहचान बनाने में कितना व्यस्त था कि उन्होंने सबाल्टर्न चित्रकारों से जुड़ने का प्रयास नहीं किया। इस प्रकार, रॉय और उनकी कला के माध्यम से हम सबाल्टर्न से जुड़ने के महत्व को समझते हैं। यहाँ यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि कला व्युत्पन्न होती है, यह शून्य में निर्मित नहीं होती है, और रॉय ने "लोक के शरीर को आध्यात्मिक रूप में रूपांतरित करके उसे संरक्षित करने और इसलिए उसे अलैंगिक बनाने" के लिए एक प्रमुख शैली बनाने के अपने प्रयास में इस पहलू को अनिवार्य रूप से अनदेखा कर दिया। सुमंत बनर्जी के अश्लीलता और लोक संस्कृति के विचार हमें यह देखने में मदद करते हैं कि जामिनी रॉय ने जिस छवि को लिया था, उसकी छवि को कैसे महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया, और इसलिए उनका ऋण लोक कला के लिए नहीं, बल्कि लोक कला की कल्पना के लिए है।





निष्कर्ष:

कालीघाट चित्रकला में न्यूनतम चित्रकला स्वरूप (Minimalist Art Form) इसकी कुछ प्रमुख विशेषताओं से समझा जा सकता है:

- १) बोल्ड आउटलाइन और सरल आकृतियाँ: कालीघाट चित्रों में अक्सर मोटी, गहरी रेखाओं का उपयोग करके आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इन आकृतियों को सरल रखा जाता है, जिससे अनावश्यक विवरणों से बचा जा सके।
- २) न्यूनतम पृष्ठभूमि: चित्रों की पृष्ठभूमि को अक्सर खाली या बहुत कम विवरणों के साथ रखा जाता है। यह केंद्रीय आकृति या विषय पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।
- ३) चमकीले और सीमित रंग पैलेट: कालीघाट चित्रों में चमकीले रंगों का उपयोग किया जाता है, लेकिन रंगों की संख्या सीमित होती है। प्राकृतिक रंगों जैसे कि अपराजिता फूल से नीला, हल्दी से पीला, और काजल से काला रंग बनाया जाता था।

- ४) एकल या दोहरी आकृति पर ध्यान: पारंपरिक रूप से, पटचित्रों में लंबी कथात्मक कहानियाँ होती थीं, लेकिन कालीघाट चित्रकला में कलाकारों ने एक या दो केंद्रीय आकृतियों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया, जिससे उत्पादन तेज हो सके।
- ५) भावनात्मक अभिव्यक्ति पर जोर: कम विवरणों के बावजूद, कलाकार चेहरे के भावों और शारीरिक मुद्रा के माध्यम से मजबूत भावनात्मक अभिव्यक्ति पर जोर देते थे।
- ६) यह न्यूनतम शैली कलाकारों की आवश्यकता से उत्पन्न हुई थी कि वे तीर्थयात्रियों और शहरी दर्शकों के लिए जल्दी और सस्ते में चित्र बना सकें। इस सरलता ने कालीघाट चित्रों को एक अनूठी पहचान दी और बाद में यह जैमिनी रॉय जैसे आधुनिक कलाकारों के लिए भी प्रेरणा बनी।
- ७) रंग और उपकरण: यद्यपि प्रारंभ में चित्रांकन, रूपरेखा और फिर मूल भाव को भरने का काम किया गया होगा, फिर भी इन चित्रों को बनाने के लिए प्रयुक्त असामान्य औजारों के बारे में पढ़ना दिलचस्प है। स्केच ड्राइंग के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ब्रश गिलहरी और बकरी के बालों से बनाया गया था। इस प्रोजेक्ट के लिए काली स्याही बनाने के लिए बर्तन के नीचे तेल का दीपक जलाकर बनाई गई कालिख का इस्तेमाल किया गया था।
- ८) कालीघाट पटचित्र: एक कथा-चित्रण शैली है जिसमें स्कॉल पेंटिंग होती है। जैसे-जैसे चित्रकार स्कॉल को खोलता है, एक दृश्य से दूसरे दृश्य की ओर बढ़ते हुए, कहानी गाता है। हालाँकि, कालीघाट शैली एकल दृश्यों पर केंद्रित थी। शुरुआत में, उन्होंने पौराणिक पात्रों को चित्रित किया।
- ९) कलाकृति को भरने के लिए इस्तेमाल किए गए अतिरिक्त चमकीले रंग ज्यादातर घर में बनाये जाते थे, जिनमें वनस्पति रंग या विभिन्न रंगों के पाउडर वाले पत्थर के टुकड़े शामिल थे।

● **संदर्भ सूची:**

- १) भारतीय कला इतिहास- श्री. जयप्रकाश जगताप
- २) कालीघाट पेंटिंग्स- श्रीमती सुहासिनी सिन्हा और श्री. सी. पांडा
- ३) कालीघाट चित्र और रेखा चित्र- श्री. डब्ल्यू. जी. आर्चर